श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - २

जुलाई - /2022

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. अनादि के संसार के ..... हमें संसार में ऐसे लुब्ध बनाते हैं, कि हम अपने धर्म की आराधना का त्याग करते हैं ।
२. साधु को तो सूक्ष्म और बादर रुप सर्व जीवो की विराधना से विरमण का नियम पूरेपूरा..... का है ।
३. एक बार श्री नमिनाथ प्रभु और श्री नेमिनाथ प्रभु के अन्तर में ..... नाम के महामुनि तीर्थ यात्रा के लिये पधारे ।
४. यह गुलाब की सुगन्ध है या केवडे की ऐसी विचारणा वह..... ।
५. भरत क्षेत्र का एक सौ नब्बे गुना ..... योजन होता है ।
६. यदि किसी ..... से इन्हें भी जीत जाऊं तो मैं त्रिलोक में अद्वितीय विद्वान माना जाऊंगा ।
७. समकित प्राप्ति के बाद जो व्रत उन्हें ..... कहा जाता है ।
८. वह शव ..... के प्रभाव से शिवकुमार को मार न सका ।
९. ज्ञान एवं दर्शन का जो उपयोग वो..... कहलाता है ।
१०. साधक को मानस जाप में ले जाने के लिये ..... सेतु समान है ।
११. श्रावक को तो ..... आदि पाँच बडे झूठ बोलने का नियम होता है ।
१२. जंबुद्वीप छोटे बडे शाश्वत..... से परिपूर्ण है ।
१३. स्वप्न में कोई वस्तु या चीज बने उसके ..... मन को स्पर्शते नहीं ।
१४. मनुष्य तथा पशु आदि जीवों को प्रगाढ बंधन में बांधना .....अतिचार है ।
१५. सम्यक् दृष्टि प्रणीत और मिथ्या दृष्टि प्रणीत परंतु..... के पास रहा श्रुत वह सम्यक् श्रुत कहलाता है ।
१६. त्रिपदी पाकर द्वादशांगी के रचयिता और १४ पूर्व के ज्ञाता गौतम ..... से ही थे ।
१७. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, इन्द्रियादि की सहायता से होता है, इसलिये वे ..... ज्ञान है ।
१८. फागुनसुदि तेरस के पावन दिन गिरिराज के ..... नाम के शिखर पर कृष्ण वासुदेव के दो पुत्र मोक्ष गये हैं ।
१९. मैं ..... जयणा पूर्वक निकालूंगा ।
२०. महाविदेह क्षेत्र जंबूद्वीप के ..... में है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. जयणा को ज्यादा से ज्यादा जीवन में लाने वाला कौनसा व्रत है ?
२. अजीतनाथ तथा शांतिनाथ प्रभु का महान प्रभाव कैसा हैं ?
३. व्यंजनावग्रह कौनसी इन्द्रिय को नहीं होता ?
४. महाविदेह क्षेत्र में कौन सा श्रुतज्ञान है ?
५. इन्द्रभूति का संशय नाश पाने से व उनका अभिमान चले जाने से वे कैसे बन गये ?
६. जीवन को धर्ममय, आराधना मय, नवकारमय बनाकर किसने आत्मकल्याण साधा ?
७. सिद्धाचल पर अनंत आत्माओ ने कहाँ सिद्धगति पाई है ?
८. जंबुद्वीप का महा जंबु वृक्ष कहाँ आया हुआ है ?
९. तुम यदि सद्गति प्राप्त करने के इच्छुक हो तो परस्त्री के बारे में किसकी तरह प्रवृति करनी चाहिये ?
१०. एक पुरुष की अपेक्षा से श्रुत का प्रारंभ भी होता है और मृत्यु विस्मृति आदि के कारण अंत भी होता है, वह कौन सा श्रुतज्ञान हैं?
११. मन के विचारों के शुद्धिकरण में किसका महत्व का योगदान हैं ?
१२. आत्मा कैसा है ?
१३. काया की नीरोगिता किस जीवन की उपलब्धि है ?
१४. जंबुवृक्ष की वीडीमा शाखा पर क्या है ?
१५. सर्व भयों को जीतने वाले कौन से भगवान हैं ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. परतप्तिषु २) निसढे ३) धिई ४) पसंत ५) अत्थुग्गह ६) सत्तवि ७) विउल ८) तव ९) चउसट्ठि १०) वंजण ११) सम्मं
१२. दोवि १३) चार १४) सुयं १५) कित्तणं १६) साइअ १७) परिहीए १८) तव १९) बीयपासेडवि २०) भाइए

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) पृथ्वी	१) लब्ध्य	६) भवसिद्धिया	६) आवेश
२) प्रहार	२) धीरज	७) रुक्मि	७) अव्यक्त ज्ञान
३) महाविभूतियाँ	३) रत्नम्	८) बुद्धि	८) नमस्कार
४) अर्थावग्रह	४) सादि-सपर्यवसित	९) व्यंजन	९) काष्ट
५) अग्नि	५) नाम-कर्म	१०) गति-जाति	१०) शिखरी

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. कितने नवकार मंत्र का भावपूर्वक जाप करने वाला तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन करता है ?
२. श्रावक से सूक्ष्म जीव की दया नहीं पाली जा सकती सिर्फ बादर जीवों की दया पाल सकते है, तब श्रावक की कितनी विरुवा दया बाकी रही ?
३. अक्षर श्रुत के कितने प्रकार है ?
४. शिखरी पर्वत के दो खंड का विस्तार कितने योजन है ?
५. शांब और प्रद्युम्न ने कितने मुनिओं के साथ सिद्ध पद प्राप्त किया ?
६. गौतम स्वामी का चारित्र पर्याय कितने वर्ष का था ?
७. मतिज्ञान में अपाय के कितने भेद हैं ?
८. श्रावक को कितने प्रकार के परिग्रह का परिमाण करना चाहिये ?
९. नवकार के कितने पद गिनने से पांचसो सागरोपम के पाप का क्षय होता है ?
१०. समवसरण में वीरप्रभु कितने अतिशयों से शोभित थे ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. इस तप धर्म की पराकाष्ठा से ही मोक्ष की मंजिल मिलती है ।
२. गौतम स्वामी ने आजीवन छठ्ठ के पारणे छठ्ठ की तपश्चर्या की थी ।
३. मिथ्यादृष्टि अभव्य की अपेक्षा से अनादि अपर्यवसित श्रुतज्ञान है ।
४. जंबुवृक्ष की एक शाखा चार योजन की है ।
५. शिवकुमार उत्तर साधक बन हाथ में तलवार लेकर योगी द्वारा बताये शव के हाथ मसलने लगा ।
६. जिनके सर्व रोग तथा पाप निवृत हो गये हैं, ऐसे शांतिनाथ भगवान हैं ।
७. सच्चा श्रावक दो घडी रात्रि शेष हो तब नवकार मंत्र का स्मरण करते हुए जाग्रत हो ।
८. तीसरे महाव्रत में साधु को तृणमात्र भी अदत्त नहीं लेने का नियम है ।
९. इन्द्रियों के विषय प्राप्त पदार्थ का व्यक्त बोध होना वह व्यंजनावग्रह है ।
१०. भाष्य अथवा वाचिक जाप यह जाप का स्थूल प्रकार है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. अतिचारों को सिर्फ जानना ही नहीं है । परंतु जानकर के अपने जीवन में से उन्हें विदा करना है ।
२. एक कील के लिये पूरा महल तोडने जैसी मूर्खता मैने की है ।
३. तेरे जीवन में कभी भी कोई कष्ट आये तकलीफ आये तो नवकार मंत्र का स्मरण करना ।
४. संज्ञाक्षर याने अठारह प्रकार की लीपी, अक्षर के आकार जानना ।
५. पूर्व की शाखा को प्रासाद कहा जाता है ।
६. जीवों के नाक,कान, पूंछ वगैरह अंगो को काटा हो ।
७. अचिंत्य शक्ति से परिपूर्ण मंत्राक्षरों का वारंवार रटण, उच्चारण अथवा स्मरण जप कहलाता है ।
८. श्री वीर नाथेन पूरा प्रणीत, मंत्र महानंद सुखाय यस्य ।
९. हेतु बिना कर्मो का क्रम ज्यों त्यों करने में आया नहीं है ।
१०. चिंतन करते प्रथम समये जीव का जो अव्यक्त ज्ञान वह मन का अर्थावग्रह ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जंबुद्वीप के किस क्षेत्र में कितने खंड उसकी गिनती । २) साधु के पाँच महाव्रत और श्रावक के पाँच अणुव्रत की तुलना ।
३. मतिज्ञान के अठ्ठावीस भेद समझाओ । ४) मंत्राक्षरों के जाप का महत्व
५) वीर प्रभु को देखते ही इंद्रभुति को आये विचार लिखो ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com